P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika
E: ISSN NO.: 2349-980X Vol-III* Issue-VII* March-2016

डॉ. रांगेय राघव के उपन्यास साहित्य में सामाजिक चेतना (''कब तक पुकाँरू उपन्यास के संदर्भ में'')

अनीता शर्मा
व्याख्याता,
हिन्दी साहित्य विभाग,
एस.एस. जैन सुबोध गर्ल्स कॉलेज, सांगानेर, जयपुर।

सारांश

डॉ. रांगेय राघव साहित्य जगत में एक दैदीप्यमान सूर्य की भांति उदित हुए और अपनी प्रतिभा का आलोक फैलाया। डॉ. राघव उपन्यासकार, समीक्षक, कवि, चिन्तक आदि के रूप में हमारे सामने अवतरित हुए है परन्तु वे एक उपन्यासकार के रूप में अधिक चर्चित हुए है। इन्होंने सामाजिक, ऐतिहासिक, जीवन चरितात्मक, समाजवादी व आंचलिक विषयों पर उपन्यास लिखे है। इन्होंने अपनी समग्र औपन्यासिक कृतियों में सामाजिक सम्बद्धता का परिचय देते हुए मानवतावादी भावना को मुखरित किया है इनके उपन्यासों में विश्वबन्धुत्व और मानवतावादी दृष्टिकोण व्याप्त है।

डॉ. रागेय राघव का उपन्यास 'कब तक पुकारूं' हिन्दी के समस्त आंचलिक उपन्यासों में ''थी एक लकीर हृदय में, जो अलग रही लाखों में'' के समान सबसे अलग, सबस निराला है। डॉ. राघव ने अपने इस उपन्यास में करनट जाति के यथार्थ को बड़ी सूक्ष्मता और विद्वता के साथ प्रस्तुत किया है। उनके समूचे औपन्यासिक कृतित्व का मूल आधार मानवीय चेतना है। मानव जो सदियों से अपने अस्तित्व स्थापन के लिये समाज की शाषक शक्तियों से संघर्षरत है, उपन्यासकार ने अपनी इसी लक्ष्यपूर्ति हेतु समाज के विभिन्न वर्गो के जन–जीवन का न केवल गहन अध्ययन किया है अपितु जन यथार्थ से अपने को जोड़ा भी है साथ ही जन–जातियों के उदात पक्ष के अतिरिक्त अनैतिक, दुर्बल, अमानवीय पक्ष को भी उद्घाटित किया है।

मुख्य शब्द : आंचलिक, दैदीप्यमान, विश्वबन्धुत्व, मानवतावादी, सच्चिदानंद, जरायमपेशा, उद्घाटित, औपन्यासिक, सन्निहित, विद्वता, दृष्टांत, बरगलाना, मार्क्सवादोन्मुख, अमानवीय, आजीविका, भाग्यवादिता, अन्तर्जातीय

प्रस्तावना

साहित्य सामाजिक प्रेरणा का शास्त्र है, युग दृष्टि को प्रकाशित करना भी साहित्य कर्म के अन्तर्गत सन्निहित रहा है साथ ही परम्परागत प्रतिष्ठा संकेतो को ठुकराकर समाज की सुप्त विवेकशीलता को जागत करना साहित्य का उद्देश्य है। समाज और व्यक्ति की क्रियाशीलता अथवा मानव में श्रद्धा रखना साहित्य का परम पुनीत कर्तव्य है।[1]

सामाजिक चेतना ज्ञानात्मक, भावात्मक आर क्रियात्मक होती है। भारतीय दार्शनिकों ने इसे सचिदानंद कहा है। चेतना वह तत्व है जिसमें ज्ञान की, भाव की और व्यक्ति अर्थात् क्रियाशीलता की अनुभूति होती है। चेतना के तीन स्तर माने गये है – चेतन, अवचेतन और अचेतन।[2] चेतन स्तर पर वे सभी बाते रहती है जिनके द्वारा हम सोचते है, समझते है और कार्य करते है। सामाजिक चेतना में मनुष्य का अहंभाव प्रबल रहता है और इसी से विचारों का संगठन होता है।[3] चेतना का केन्द्र व्यक्ति होता है, किन्तु चेतना जिस संसार में प्रत्यक्षतः प्रभावित होती है, उसका एक महत्वपूर्ण अंग है – समाज और समूह। इसी समाज और समूह के सन्दर्भ में डॉ. रांगेय राघव का उपन्यास ''कब तक पुकाँरू'' उदात दृष्टांत है। इस उपन्यास में लेखक ने सामाजिक चेतना को जिस तरह से उकेरा है वह अद्वितीय है। समाज में व्याप्त विसंगतियों और विषमताओं को विभिन्न चरित्रों में ढाल कर सम्पूर्ण समाज का उदात चित्रण किया है। भरतपुर और ब्रज प्रदेश की सीमा पर बसे बैर नामक ग्राम मे और उसके इर्द–गिर्द खाना–बदोश जीवन यापन करने वाले जरायमपेशा नटो की बस्ती ह, उपन्यास का कथानक इसी अंचल विशेष से सम्बद्ध है। इन जरायमपेशा करनटों की संस्कृति, रीति–रिवाज, विश्वास, अंधविश्वास, नैतिकता तथा अनैतिकता का सजीव चित्रण करके लेखक ने एक नयी दुनिया का आवि"कार किया है।[4]

करनट जाति विशेष को केन्द्र में रखकर सभी चरित्रों की मनोदशा का जीवंत चित्रण इस उपन्यास को अनुपम बनाता है। लेखक ने अपने उपन्यास में सामाजिक चेतना को मानवतावादी दृष्टिकोण से देखते हुए प्रत्येक चरित्र और प्रत्येक घटना को जीवंत बना दिया है तथा काल्पनिक चरित्रों व काल्पनिक घटनाओं को मूर्तरूप दिया है जो कि हमारे समाज की कडवी सच्चाई का सजीव चित्रण है।

अध्ययन का लक्ष्य

करनट जाति जो समाज से उपेक्षित व शोषित होकर गाँव–नगर की सीमाओं से बाहर अपना जोवन व्यतीत कर रही हैं, उनके संघर्षपूर्ण स्थितियों का चित्रण इस शोध–पत्र में किया गया है। ''कब तक पुकारूं'' उपन्यास में करनट जन–जाति व ठाकुरों के मध्य चलते अर्न्तद्वन्द को उद्घाटित किया गया है साथ ही परम्परागत भारतीय समाज में फैली कुरीतियां, अंधविश्वास, टोने–टोटके, जातिगत भेदभाव वर्ग संघर्ष व नषा खोरी इत्यादि पर प्रकाश डाला गया है। डॉ. रांगेय राघव ने इस उपन्यास में सामाजिक चेतना व मानवतावादी दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है। यह अध्ययन शोधार्थी के शोध कार्य में लाभदायक सिद्ध होगा। इसके माध्यम से सदियों से त्रस्त व शोषित करनट जाति के प्रति समाज में जागरूकता फैलेगी।

विषय–प्रवेश

साहित्यकार एक प्रबुद्ध सामाजिक प्राणी होता है। उसकी निर्मल चेतना समाज के प्रभावों को अधिक सूक्ष्म रूप से ग्रहण करती है तथा तत्कालीन युग की सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, नैतिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक परिवर्तनों से अत्यन्त प्रभावित होती है। ''समाज की सांस्कृतिक जागृति, उसकी प्रबुद्धता, उसकी सभ्यता–जनित जागरूकता के प्रति सजगता उसे आत्मसात् कर लेना उससे रागात्मक बौद्धिक सामंजस्य स्थापित कर लेना ही सामाजिक चेतना कहलाती है।''

डॉ. रागेय राघव वर्तमान समय में जाति और वर्ग व्यवस्था की कोई उपयोगिता न मानकर जनजातिय लोगों को जातीय संकीर्णता से मुक्त करने की कामना करते है। इस दृष्टिकोण को लेकर उन्होंने कब तक पुकारूं जैसे उपन्यास लिखें जिसमें जिन्होंने करनटों के जीवन को समग्रता से प्रस्तुत कर अपने मानवतावादी दृष्टिकोण का परिचय दिया है। प्राचीनकाल से मध्ययुग तक इन लोगों की स्थिति अत्यन्त दयनीय थी। हिन्दू धर्म में अव्यवहारिक रूढि वादिता के प्रवेश के कारण जन–जातियों को समाज से उपेक्षित होकर गाँव–नगर की सीमाओं से बाहर दलित, शोषित, त्रस्त होकर अपना जीवन व्यतीत करने को विवश होना पड़ा। मध्ययुग में इस्लाम धर्म की जाति–पाति से रहित बंधुत्व की भावना ने इसे अपनी ओर आकृष्ट किया। जिससे जन जातियाँ संकीर्णता से थोड़ी मुक्त हुई, पर यह लहर सभो तक न पहुँचने के कारण अधिकांश लोग पहले की तरह ही जातियता के बोझ से दबे हुए रहे। आधुनिक काल प्रत्येक दृष्टि से उन्नति का काल होने के कारण इन जातियों की स्थिति में भी सुधार हुआ। ईसाई मिषनरियों द्वारा प्रदान की गयी सुविधाओं ने भी इन्हें अपनी ओर आकर्षित किया। समाज सुधारकों के सद्प्रयत्नों से भी इन जातियों की स्थिति में सुधार हुआ। स्वाधीन भारत के संविधान निर्माताओं ने इन्हें संवैधानिक संरक्षण देकर शोषण से मुक्त किया। इसी कारण आज शोषित जातियों को षिक्षा सहित अन्य प्रकार के इतने अवसर मिल रहे हैं कि उनकी सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक हैसियत में व्यापक बदलाव आया है।

शोषण की शिकार

डॉ. राघव ने भी अपने उपन्यास में इन्हीं स्थितियों का चित्रण किया। ''कब तक पुकारूं'' में शोषण से त्रस्त करनट जाति के संघर्षो का वर्णन हुआ है। करनट जाति अन्य जातियों से नीची समझी जाती है लेकिन इन जाति तथा इसकी उपजातियों में भी आपसी भेद–भाव की भावना पायी जाती है। सुखराम, चन्दन मेहत्तर को अपने से नीचा समझकर उसकी चिलम नहीं पीता। इनकी इस फूट का फायदा सवर्णो ने उठाया और इन्हें बरगलाकर, दबाकर अत्याचार किए और शोषण का शिकार बनाया। करनट सुखराम सवर्णो के अत्याचार से पोडित होकर दर–दर भटकने को विवश होता है तो वहीं उसकी पुत्री चन्दा ठाकुर के बेटे नरेश से प्रेम करने के अपराध में ठकुरानी की मार सहती है। उसका दोष सिर्फ इतना है कि वह नटनी जाति की है। ठाकुर विक्रम सिंह की सामन्तीय भावना इस अत्याचार का विरोध नहीं कर पाती । सामन्तीय व्यवस्था ने सदैव निम्न जातियों को प्रताड़ित कर उनका शोषण किया है। यदि निम्न जातियों में कोई ऊपर उठने की कोषिष करता है तो वह सुखराम और चन्दा की तरह कुचल दिए जाते हैं। लेखक का मानना है कि जब तक जातीय–संकीर्णता की भावना मिट नहीं जाती तब तक निम्न जातियाँ उन्नति नहीं कर सकती। जब तक यह संकीर्णता रहेगी तक तक निम्न जाति की चन्दा जैसी लडकियाँ उच्च–जाति के लड़के से प्रेम करती हुई भी सामन्तीय मनोवृत्ति वाले सवर्णो द्वारा ठुकरायी जाती रहेगी। शोषित जातियों में सामाजिक चेतना तब ही आ सकती है जब ये लोग शिक्षित होकर अपने को पहचाने तथा अपनी रूढ़ एवं जीर्ण परम्पराओं के नकाब से मुक्त होकर प्रगति की रोशनी ग्रहण करें।[5]

वैवाहिक स्थितियाँ

''कब तक पुकारूं'' के करनटों में औरत का परिवार या पुरूषों पर नियंत्रण होने के कारण इस जाति में मातृसत्तात्मक परिवार होते हैं।[5] इस समाज में विवाह के विविध स्वरूपों का प्रचलन पाया जाता है। सुखराम, प्यारी कजरी व कुर्री का बाल विवाह होता है। सोनो करनटनी विधवा होने के पश्चात् एक गबरू करनट के साथ बैठ जाने के कारण उसका विवाह पुनर्विवाह तो कहलाता है लेकिन उनका यह विवाह अनमेह विवाह का उदाहरण भी बनता है। सुखराम एक साथ दो पत्नियाँ रखकर बहुपत्नो विवाह का उदाहरण प्रस्तुत करता है। चन्दा भी ठाकुर के बेटे नरेश से प्रेम कर अन्तर्जातीय प्रेम विवाह में बंधना चाहती है।

दाम्पत्य जीवन की सफलता के लिए पति–पत्नी म आपसी प्रेम–भाव का होना आवश्यक है, इसका उदाहरण करनट समाज में भी देखने को मिलता है। कजरी, सुखराम की पत्नी के रूप में उससे अनन्य प्रेम करती है। प्यार के साथ–साथ कभी–कभी पति–पत्नी में आपसी झगड़ा भी होता है। सुखराम की माँ बेला और उसके पति का झगड़ा, प्यारी–सुखराम, कजरी–सुखराम

का झगड़ा दृष्टव्य है। यह झगडा वैचारिक असामंजस्य के कारण होता है। करनट नारी अपने पर–पुरूष का आधिपत्य स्वीकार नहीं करती जिसके कारण इनके दाम्पत्य जीवन में टूटन आ जाती है। कुर्री व कजरी का विवाह विच्छेद् भी इसी का परिणाम है।

सामाजिक विसंगतियाँ

करनट समाज में विभिन्न सामाजिक–विसंगतियाँ भी पायी जाती हैं। यहाँ स्त्रियाँ और पुरूष साथ बैठकर शराब पीते हैं। बेला का उदाहरण दृष्टव्य है। कुर्री भी हमेशा नशे में धुत्त रहता है और अपनी पत्नी कजरी के साथ मारपीट करता है। यहाँ खुषी के अवसरों पर शराब पीकर सभी लोग धुत्त होकर नाचते हैं। स्त्री–पुरूष दोनो ही धुम्रपान भी करते हैं। कुर्री शराबी होने के साथ–साथ जुआरी भी था। ऐसे लोग अपने शौक के लिए चोरियाँ भी करते हैं। सुखराम भी एक बार जुआं खेलने की बात कहता है। ये लोग चोरी करके अपनी आजीविका का साधन जुटाते हैं। सुखराम भी सेंघ मारता है। शराब पीकर जरा–जरा सी बात पर झगड़ना इनकी प्रवृत्ति बन गयी है। झगड में किसी की हत्या करने से भी नहीं चूकते और यह सब अशिक्षा के कारण होता है, जिसकी वजह से ये असभ्य एवं बर्बर बने रहते हुए रूढ़ियों का बोझ ढाते हैं। डॉ. राघव ने अपनी सामाजिक चिंतन प्रस्तुत करते हुए कहा है कि जाति–पाति के बन्धन झूँठे हैं, जन्म से कोई ऊँचा–नीचा नहीं होता है। वे अज्ञान व अंधकार में छटपटाते लोगों में षिक्षा का प्रचार और प्रसार कर उन्हें ऊपर उठने की बात करते हैं। वस्तुतः यह उनकी मानवतावादी सोच है।

समाज में आज आर्थिक स्तर पर वर्ग–भेद होने के कारण आर्थिक विषमता को बढ़ावा मिल रहा है। जिस कारण करनट लोग दरिद्रता से परिपूर्ण जीवन जी रहे हैं। खिन्नता के अथाह सागर में गोते खा रहे हैं। उनकी गरीबी का मुख्य कारण उच्च–वर्ग द्वारा इनका शोषण है। साथ ही ये लोग जितना कमाते हैं उसे जुआ और शराब में खर्च करके गरीबी में छटपटाते रहते हैं। आलस्य व भाग्यवादिता के कारण ये लोग हाथ पर हाथ रखकर बैठे रहते हैं और यही सोचते हैं कि जो भाग्य में होगा वही होकर रहेगा। इन सब के पीछे प्रमुख कारण अशिक्षा है।भूमि और व्यवसायहीन होने के कारण ये लोग अपनी आजीविका के लिये आदिम साधनों पर निर्भर रहते हैं। जैसे उच्च–वर्ग की दया से पेट पालते हैं, खेल–तमाशा, नाच–गाना दिखाकर कुछ कमा लेते हैं और इनकी स्त्रियाँ सौने की तरह भीख मांगने के साथ–साथ कजरी की तरह सूत–टोकरी भी बेचकर कुछ धन इकट्ठा कर लेती हैं। ये असभ्य लोग जंगली पशुओं का मांस बेचकर या शहद बेचकर भी अपनी रोटी कमाते हैं। सुखराम की तरह जड़ी–बूटियों से इलाज करके कुछ प्राप्त कर लेते हैं। जरायमपेशा होने के नाते इनकी औरते इकन्नी–दुअन्नी मे व एक भेली गुड की पाने की आशा में ही मांसल सम्बन्ध जोड़ लेती हैं।

स्वतंत्र भारत में इन जातियों को आर्थिक संरक्षण मिलने के कारण दिन पर दिन इनकी आर्थिक स्थिति में सुधार होने लगा हैं। आज ये लोग गाँव में ही नहीं बल्कि शहरों में भी आकर बस गये हैं और अपनी रोजी–रोटी के लिए कोई काम–धन्धा करने लगे हैं। इनकी औरतों का अब प्यारी व कजरी की भाँति अपना तन नहीं बेचना पडता। यही कारण है कि स्वतंत्र भारत में जन्मी चन्दा का भी अस्त्तीव खतरे में नहीं पड़ता।

डॉ. राघव की आर्थिक दृष्टि मार्क्सवादोन्मुख समाजवादी है।[6] ये वर्ग संघर्ष द्वारा समाज के निम्न लोगों को ऊपर उठाने का प्रयास करत हैं। इनका विचार है कि अगर निम्नवर्गीय लोग अपने अधिकारों के प्रति सजग रहे और अन्याय के विरूद्ध आवाज उठायें तो इनकी स्थिति में शीघ्र ही परिवर्तन आ सकता है।

''कब तक पुकारू'' में सुखराम आंषिक रूप से अपनी आर्थिक दासता के विरूद्ध संघर्ष करता है। डॉ. राघव समाज में आर्थिक विषमता पैदा करने वाली पैसों की गुलामी को बुरा समझते हैं। अतः वे कहते हैं कि शोषण की घुटन सदैव नहीं रहेगी कभी न कभी तो मेघों में से सूर्य चमकेगा और समाज में समाजवाद की स्थापना होगी।

राजनीतिक परिस्थितियों से उत्पन्न समस्याऐ

''कब तक पुकारू'' में विभिन्न राजनीतिक परिस्थितियों और उनकी उत्पन्न समस्याओं जैसे–सामाजिक–यातनाएं, ब्राह्मण–ठाकुर आदि कुलीन कहे जाने वाले लोगों के अकुलीन कार्यों का विष्लेषण, सामन्तीय शोषण, पुलिस का दमन और अत्याचार को प्रस्तुत किया गया है। इस उपन्यास में अंग्रेजो की गुलामी और उसके बाद मिली स्वतन्त्रता की स्थिति–परिस्थतियों का वर्णन किया गया है। उस समय अंग्रेजो का भारत पर राज्य था और उनकी दृष्टि हिन्दुस्तानियों के प्रति हीनता की थी। उनका विचार था कि हिन्दुस्तानियों को दबाकर रखना चाहिये । जनता अंग्रेजो की संकीर्ण भावना के प्रति जागरूक हो रही थी। उन्होनें अंग्रेजों के विरूद्ध आवाज उठायी, और कई आन्दोलन चलाये उसके बाद अंग्रेजी राज्य तो समाप्त हुआ पर देश का शासन यहाँ के सांमतवादी सोच से ग्रस्त राजनीतिज्ञों के हाथों में आया। इनके समय में भी जनता पहल जैसी ही पिसती रही। ऐसी विकट राजनीतिक परिस्थितियों में करनट जाति सामन्तीय शोषण व षड़यन्त्रों का शिकार हो रही थी। सामन्तों में भाई–भाई में होने वाले संघर्षो से लोग बरबाद हो जाते हैं। यही हाल सुखराम के साथ भी हुआ उसकी माँ ठकुरानी अपने जेठ द्वारा अपने पति की हत्या के बाद दरबान की मुहब्बत में फंसने के कारण सामन्तीय समाज से ठुकरायी जाती है और वह करनटों में जीवन गुजारती है। इसके कारण ही वंशज सुखराम, चन्दा आदि सामन्तीय शोषण का शिकार होते हैं। चन्दा, ठाकुर विक्रम सिंह के बेटे से प्रेम करती ह। इस अपराध के कारण वह ठकुरानी द्वारा पीटी जाती है।ठाकुर वैसे तो उँच–नीच, जाति–पांति के भेदभाव को मिटाने के लिए लम्बे–चौडे भाषण देता है पर जब अपने ऊपर गुजरती है तो वह मौन धारण कर लेता है। चन्दा पर किये अत्याचार के खिलाफ कुछ नहीं बोलता। सुखराम सामन्तवादी दुख से दुखी होकर भावातिरेक में अपनी पालिता चन्दा का गला घोंट देता है। डॉ. राघव का मानना है कि इसी सामन्तवाद के षडयंत्र ने सुखराम जैसे भोले–भाले लोगो का जीवन बरबाद कर दिया है।

करनट लोग पुलिस के द्वारा किये जाने वाले अत्याचारों के चगुंल म भी फंसे रहते हैं। पुलिसवालों की

निगाह इनकी जवान और खुबसूरत पत्नियों पर पड जाती थी तो वे किसी न किसी बहाने उनके पतियों को जेल में डाल देते थे और फिर उनकी पत्नियों द्वारा पुलिस वालों की वासना की तृप्ति पर ही उन्हें रिहा करते थे। रूस्तम खां की निगाह प्यारी पर पड जाती है, तो वह सुखराम को चोरी के आरोप में फंसाकर जेल में डाल देता है, उसकी जुतों से पिटाई करवाता है और बाद में प्यारी द्वारा पुलिस के संग रात काटने पर ही उसकी मुक्ति होती है। अगर ये लोग अपने पर होने वाले अन्याय की शिकायत यदि पुलिस वालों से करने जाते हैं तो पुलिस, अन्यायी समाज के ठेकेदारों का साथ देकर सुखराम जैसे लोगो को जेल में डाल देती है और हत्या जैसे अपराध इनके सिर पर डाल कर इन्हें जेल में सडने को विवष कर दिया जाता है।

ऐसे शोषण के षिकार व्यक्ति अपने राजाओं के यहाँ शरण लेते हैं । उनका राजा स्वयं चाहे कितनी ही विपत्तियों में फंसा हो पर अपनी शरण आए व्यक्ति की, अपना कर्तव्य समझकर सहायता करता है वह सुखराम की बहादुरी को देखकर उसकी सहायता करता है। ये लागे अपने राजा द्वारा बनाये गये कानून को ही मानते हैं, उसी की सत्ता का स्वीकार करते हैं।

स्वतंत्र भारत में इन जातियों को राजनैतिक व संवैधानिक अधिकार प्रदान किये गये हैं, जिससे इन्हें शोषण से मुक्ति मिली है। स्वाधीन भारत में जरायम–पेषा कानून बनने पर पुलिस इनको बिना कारण बताये गिरफ्तार नहीं कर सकती और ना ही इनकी स्त्रिया को देह व्यापार के लिए विवष किया जाता है। इसी कारण चन्दा स्वतंत्र भारत में पुलिस के शोषण से अपनी रक्षा कर पायी है।

डॉ. राघव शोषण को प्रश्रय देने वाली राजनीतिक व्यवस्था का विरोध करते हैं। उनका विचार है कि भ्रष्टाचार का विष वर्तमान समाज और राजनीति में बुरी तरह व्याप्त हो गया हैं। व्यक्ति मानस में स्वार्थान्धता इस प्रकार घर कर गयी है कि उसे दूर करना असंभव सा लगता है। चोर–बाजारी, रिश्वत, छल–कपट आदि तभी दूर हो सकते हैं जबकि समाज का नैतिक स्तर उँचा हो। नौकर शाही, दलबद्ध राजनीतिज्ञों का वर्णन इन उपन्यासो में हुआ है। डॉ. राघव ऐसी घिनौनी व्यवस्था जिसमें जनता छटपटायें पर प्रहार करते हैं।

धार्मिक अंधविश्वास

''कब तक पुकारूं'' की करनट जाति अन्धविष्वासों की शीत में सिकुडो हुयी धारणाओं को ही अपना धार्मिक जीवन समझती है। ये लोग अन्धश्रद्धा के कारण समय–कुसमय तथा आदि–व्याधि में देवी–देवताओं व पीर पैगम्बरों की पूजा अर्चना करते हैं व मनोतियाँ मानते हैं। ये लोग पुरखों को देवता मानते हैं और सर्प को भी पुरखों का देवता मानते हैं। अबोध चन्दा कहती है सर्प पुरखों का देवता है जो गढ़े धन की रक्षा करता ह। जिसका भाग होगा, धन उसे मिल जाएगा। इन लोगों में यह विश्वास है तहखानों की पुरानी कचहरी में पहले राजा के लिए हुक्का भर कर रखा जाता था जो सवेरे ऐसा मिलता था जैसे पिया हुआ है। ये लोग भूत–प्रेत, चुडैल, भूतनियों में विश्वास करते हैं। ये लोग जादू–टोना और मंत्र–तंत्र से सिद्धियों में विश्वास करते हैं। तांत्रिक लोग मरघट में औरतों को मनौती कराने के बहाने ले जाता है तथा उन्हें नंगी करके शराब पिलाकर उनके साथ कुकृत्य करते हैं। वह सुखराम को भी कार्य सिद्धी के लिये एक बहेलिन को फंसाने के लिए प्रोत्साहित करता है। वह ताबीज से शारीरिक व्याधियों को रोकने का दंभ भरता है। सुखराम भी उसकी प्रेरणा से बोहरे लल्लू के घर सेंध लगाकर पैसे चुराता है तथा दारोगा से प्रतिशोध लेने के लिए उस पर जादू टोना करवाता है।

सुखराम आत्मा व पुनर्जन्म के विश्वास के कारण अपनी पूर्वज ठकुरानी को मेम व चन्दा के रूप में जन्म लेते हुए मानता है। ये लोग सगुन और असगुन में भी विश्वास करते हैं। स्पष्ट है कि ग्रामीण अंचल इतना पिछड़ा है कि भोले–भाले ग्रामीणों को अन्धविश्वास के आधार पर चन्दन जैसे खूब लूटते हैं। परिणामतः उनके इस भोलेपन का ये ढोंगी नाजायज फायदा उठाते हैं। सट्टे के नम्बर बताना, खजाने का पता लगाना, भूत–प्रेतों से बाते करना, जादू मंत्र से असंभव को सम्भव करना इत्यादि चालबाजी के कार्यों से ये अपना महत्त्व बनाए रहते हैं। इस तरह करनट लोग भूत–प्रेत और अन्धविष्वासों की परतों तले दबे हैं।

रीति–रिवाज व रहन–सहन

करनट लोगो की अपनी संस्कृति है जिनके अनुसार ये अपना जीवन व्यतीत करते हैं। ये लोग जंगली पशुओं का मांस खाते हैं। विवाह व खुशी के अवसर पर इनमें नाच–गानों का कार्यक्रम चलता है। इसी तरह ये किसी त्यौहार या पर्व पर लगने वाले मेंलो में भी भाग लेते हैं जहाँ पर ये कुछ कमा भी लेते हैं। इनके लोक जीवन में लोक कथाओं और लोकगीतों का भी प्रचलन पाया जाता है। जो अपनी संस्कृति को रागात्मकता के साथ प्रकट करते हैं। इन लोगों की बातचीत में लोकोक्ति व मुहावरों का भी पयोग होता है जो इनके जीवन की एक विशेषता है। असभ्य करनट बातचीत में गालियों का प्रयोग भी करते हैं। सुखराम व कजरी पाश्चात्य संस्कृति के सम्पर्क में आने पर अपने रहन–सहन के तरीके में बदलाव लाने का प्रयास करते हैं।

करनट स्त्रियों यौन सम्बन्धों में स्वच्छन्द होती हैं इनमें नैतिकता के कोई बंधन नहीं होते । इसलिए करनट की बेटी–प्यारी यौन सम्बन्धों के लिए स्वच्छन्द है। वह सुखराम पर विमोहित होते हुए भी बचपन में कंजरों से सम्पर्क बनाए रखती है। सौनो की दृष्टि में सच्चा करनट वही है जो नैतिकता के बंधन नहीं मानता। यौन सम्बन्धों के अतिरिक्त व्यवहार के ओर भी बहुत से क्षेत्र हैं जिनमें ये नैतिकता नाम की कोई चीज नहीं स्वीकारते हैंः– जैसे चोरी करना, जुआ खेलना, लडाई झगडे करना ये सब अनैतिक ही हैं। हालांकि कई जगह ये अपनी नैतिकता का परिचय भी देते हैं। सुखराम ने अंग्रेज लड़की सूसन की डाकुओं से रक्षा कर अपनी नैतिकता का उदाहरण पेष किया है और सुखराम अपनी मानवतावादी भावना के कारण ही अंग्रेज सायर की प्रसन्नता का पात्र बना। अपने दुश्मन रूस्तमखां का इलाज करके भी सुखराम अपनी नैतिकता को प्रकट करता है।

निष्कर्ष

उपर्युक्त विवेचन क आधार पर कहा जा सकता है कि यह जाति अंधविष्वासों से लिपटी हुयी अपनी

विभिन्न सांस्कृतिक परम्पराओं को अपने जीवन में संजोए हुए है। इनमें नैतिकता के कोई बन्धन नहीं हैं और कहीं–कहीं मानवतावाद भी मुखरित हो जाता है। ऐसी विरोधी विचारधारा वाले लोगो के धार्मिक–सांस्कृतिक जीवन को ही नहीं जीवन के सामाजिक–आर्थिक पहलु को भी अपने इन उपन्यासों में उद्घाटित कर डॉ. राघव न यह कहना चाहा है कि जब तक ये शिक्षित नहीं हो जाते तब तक शोषण का षिकार होते, अज्ञान व अंधकार में छटपटाते रहेंगें। डॉ. राघव की दृष्टि मानवतावादी है अतः व सम्पूर्ण मानव जाति की मंगलकामना करते हुए समाज के ऐसे ठुकराये हुए लोगों को ऊपर उठाने पर बल देते हैं। अगर ऐसे लोगों को हम सब मिलकर अज्ञान एवं अन्धविष्वास के चंगुल से दूर कर इन्हें षिक्षा का प्रकाष देकर मार्ग दिखाये तो हम मानव जाति का कल्याण कर सकेगे। डॉ. राघव अपनी मानवतावादी दृष्टि के कारण ही विश्व बन्धुत्व या वसुधैव कुटुम्बकम्[7] की कामना करते हैं।

अतः स्पष्ट है कि इस जरायमपेशा करनटों की संस्कति, रीति–रिवाज, विष्वास, अन्धविश्वास, नैतिकता तथा अनैतिकता का सजीव चित्रण करके लेखक न एक नयी दुनिया का आविश्कार किया है। इस प्रकार सारे कथानक का स्वरूप जरायमपेशा नटों के समाज की नग्न विकृत्त स्थितियों, पेट के लिए तन का सौदा करने वाली युवतियों और नायक सुखराम की अनुभूतियों और संकल्पित स्वप्नदृष्टियों की झीनी चादर से ढांका गया है, जिसम शोषण, सामाजिक अन्याय बुर्जुआ मनोवृत्ति एवं असमानता के विरूद्ध क्रान्ति करने का अपरोक्ष रूप से आवाहन किया गया है। लेखक की यह विचारधारा उसकी समाजवादी चेतना और मानवतावादी दृष्टिकोण की प्रतीक है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. हिन्दी साहित्य : सामाजिक चेतना – डॉ. रत्नाकर पाण्डेय, पृष्ठ संख्या–156
2. सामाजिक उन्नति : इन्द्रदेव तिवारी, कोषोत्सव स्मारक संग्रह पृष्ठ संख्या–399
3. हिन्दी विष्वकोष : चतुर्थ खण्ड सम्पादक डॉ. रामप्रसाद त्रिपाठी पृष्ठ संख्या– 283
4. डॉ. रांगेय राघव और उनके उपन्यास : डॉ. लाल साहब सिंह पृष्ठ संख्या– 106
5. समाज शास्त्र–अवधारणाएं एवं सिद्धान्त : जे.पी. सिंह पृष्ठ संख्या–242
6. समाजवाद : भारतीय जनता का संघर्ष – अयोध्या सिंह पृष्ठ संख्या–157
7. वसुधैव कुटुम्बकम्– अखंड ज्योति – फरवरी 1971 (''उदार चरितानाम तु वसुधैव कुटुम्बकम्'') पृष्ठ संख्या–35